Vol III Issue V June 2013
Impact Factor : 0.2105
ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief
H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue. 5, June. 2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

साहित्य और तुलनात्मक अध्ययन एक तात्विक विवेचन

विवेकानंद हरिभाऊ चव्हाण

हिन्दी विभाग प्रमुख
तुळजाभवानी महाविद्यालय, तुळजापूर

सारांशः

वस्तुतः तुलनात्मक साहित्य विभिन्न राष्ट्रीय साहित्यों का एक–दूसरे के आश्रय से तुलनात्मक संबंधो का अध्ययन है, तौलनिक अध्ययन पध्दति से विभिन्न राष्ट्र एक दूसरे को पहचान या समझ सकते है, भले ही एक–दूसरे को मित्रता के दृष्टि से न भी देखे तो भी ओ कभी एक–दूसरे के शत्रु बनकर एक–दूसरे के सामने आकर नहीं खडे होंगे। हमारे राष्ट्र के भीतर लिखा गया साहित्य चार–दीवारी के भीतर राष्ट्रीय साहित्य है चार–दीवारी के परे साहित्य का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य है। तुलनात्मक साहित्य के लिए प्राचीन या आधुनिक का कोई अर्थ नहीं है, जो भी तुलनीय है वही तुलनात्मक साहित्य का विषय है। तौलनिक अध्ययन कर्ता एक वैश्विक नागरीकत्व प्राप्त कर विश्व साहित्य को तुलनात्मक साहित्य के एक व्यापक छत के निचे ले आने का उच्चतम दाईत्व आज निभा रहा है।

प्रस्तावना :

समय के साथ परिवर्तित होना जीव की विशेषता रही है, जहाँ परिवर्तन नही है, वहाँ उस जीव का प्रवाह थम सा जाएगा। अब सवाल यह है कि कहीं कोई एक जीव वास्तव्य कर रहा है, समय तो बहोत आगे निकला जा रहा है किन्तु एक जीव उस समय के साथ बदल नहीं रहा है, क्योंकि वह अकेला है, उसे प्रवाह नहीं है ओ पृथ्वीपर जहाँ विचरण करेगा वह अपने–आप को अकेला ही पाएगा यहाँ परिवर्तन की गुंजाईश नहीं है, क्योंकि अन्य जीव अगर उस एक जीव के साथ जुड जाते है तो वहाँ एक समाज निर्माण होता या उस समाज का एक प्रवाह बन जाता । यही बात किसी भी साहित्य पर लागू होती है । साहित्य समाज का दर्पण होता है यह ठिक है किन्तु साहित्य एक मर्यादित, संकुचित समाज का दर्पण कभी नहीं हो सकता। साहित्य समाज मन का एक व्यापक परिणाम होता है। जब समाज मन व्यापक होगा तो ऐसे समाज मन से एक व्यापक साहित्यिक अभिव्यक्ति होगी।

साहित्य को व्यापक तथा वैश्विक अगर बनाना है तो अपनी सिमाओं को मर्यादाओं को और वैचारिक दायरे को तोडना होगा और यह प्रक्रिया तभी पूर्ण हो सकती है जब हम अपनी साहित्यिक अवधारणाओं को तथा विचारधाराओं को साहित्य की सिमा बाँधकर तलाश करने की कोशिश करेंगे। समाज कहीं पर भी क्यों न स्थित हो, हर एक समाज को अपनी एक अलग अवधारणा होती है और हमें इस अवधारणा की तलाश हर एक सामाजिक भाशा में तलाशनी होगी।जब हम विचारधाराओं के बिच समान्तर रेखाओं की तलाश करना चाहते है तब सबसे पहले प्रचलित स्त्रोतों को देखना होगा और स्त्रोतों का अध्ययन कर उन स्त्रोतों में से ओ समान्तर रेखाएँ, साहित्यिक विरोधाभास खोज निकालने होगें जब यह प्रक्रिया पूर्ण होगी तब इसी प्रक्रिया को साहित्य जगत्में एक अध्ययन का शिर्शक दिया जाएगा और वह शिर्शक होगा 'तुलनात्मक अध्ययन।'

तौलनिक प्रक्रिया में अवधारणा का सन्दर्भ :–

यहाँ अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह निर्माण होता है कि क्या तुलनात्मक साहित्य केवल अध्ययन की एक पध्दति है, या वह एक साहित्य की अवधारणा बन सकता है, लेकिन हम तुलनात्मक अध्ययन के बारे में हमेशा से ही नकारात्मक रहे है, लेकिन हम यह भुल जाते है की, तुलनात्मक साहित्य को प्रथम रुप में अध्ययन से ही शुरुवात होती है परन्तु इसका अंतिम रुप जो है वह एक अवधारणा में बदल जाता है। जहाँ अवधारण की प्रक्रिया होती है। इस प्रक्रिया से तात्पर्य है कि हम किसी विशेष विषय की हद बाँध देते है अवधारणा का सिधा तात्पर्य यहाँ सुविचारों को धारण करना तथा स्विकार करना होता है। हम जब भी विचारों के प्रति किसी भी सकारात्मक तत्वों को अपनाते है, तब उन तत्वों को अपनाने के प्रक्रिया सिधी–सिधी नहीं होती हम सबसे पहले उन तत्वों का अध्ययन ही करते है, अध्ययन के पश्चात ही एक निश्चय करते है, ये निश्चय ही अवधारणा का रुप धारण कर लेते है। अर्थात तुलनात्मक साहित्य की प्रक्रिया में दोनों का समावेश होता है एक ओर अध्ययन तो दूसरी और अध्ययन के पश्चात जिस विशय का हम अध्ययन करते हे उस विषय की अवधारणा।

तुलनात्मक आधार :–

परंतु हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए की किन्हीं दो भाषाओं के बिच दो साहित्यों के बिच सौ प्रतिशत तुलनात्मक अध्ययन नहीं हो सकता, तुलना में कुछ विशमता, कुछ असमानता एवं विपरितता तो होती ही है। साहित्य के विविध विरुध्दार्थी अंगो का अध्ययन करना ही तुलनात्मक साहित्य की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। परन्तु हम यहाँ ऐसा कह सकते है कि तुलनात्मक अध्ययन की आधारभूत प्रतिज्ञा है, मूलतः नदी की दो धाराएँ जो कालांतर से पर्याप्त दूर एवं भिन्न हो गयी है, उनके भेदक कारणों का विश्लेषण कर उनकी मुलभूत एकता स्थापित करना। तुलनात्मक अध्ययन का एक मुख्य तत्व यह है किवह अवधारणा निश्चित होने के पश्चात् मुलभूत एकता की स्थापना की ओर बढता है, मुलभूत

Title : *साहित्य और तुलनात्मक अध्ययन एक तात्विक विवेचन*
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] *विवेकानंद हरिभाऊ चव्हाण* **yr:2013 vol:3 iss:5**

एकता का ज्ञान आवश्यक इसलिए है कि मनुष्य के पास जो बुध्दिप्रामाण्यवाद है वह अन्य जीवों के पास नहीं है बुध्दीप्रामाण्यवादी जीव कभी अनगिनत प्रश्नों को लेकर द्वन्द्वात्मक मानसिकता में नहीं रह सकता जबकी उसके पास उस द्वन्द्वात्मक परिस्थिती से उठने के लिए एक बहोत बडा तुलनात्मक आधार है।

साहित्य और तुलनात्मक प्रक्रिया का उत्तरदाईत्व :–

साहित्यिक अध्ययन कर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ ऐसा है कि जितना ज्ञान से सम्बन्धित क्षेत्र व्यापक है उतना ही तुलनात्मक क्षेत्र उस व्यापकता का अध्ययन करने के लिए अधिकारी है।साहित्य के पांच तत्व है 1) कथातत्व 2) भाव तत्व 3) विचार तत्व 4) कला तत्व 5) भाशा तत्व। ये सभी तत्व तुलनात्मक शोध के विषय है। दो साहित्यों के बिच तथा दो भाषाओं के बिच जब हम तुलनात्मक प्रक्रिया से अध्ययन करते है तब वह अध्ययन इन तत्वों को लेकर ही करना पडता है, मनुष्य का शरीर जिस प्रकार पंच महाभूत तत्वों से बना है और इन पंच महाभूतों के आधारपर भारतीय वैद्यकशास्त्र ने मनुष्य के प्राकृतिक शारिरीक रचना का अध्ययन तुलनात्मक पध्दती से किया और औषधीशास्त्र का निर्माण किया है इस बात को हम भूल नहीं सकते। विरोधी तत्वों के अन्तरात्मा से भी तुलनात्मक अध्ययन की प्रक्रिया एकता का स्वर तलाश कर विरोधी तत्वों का नाश कर देता है। शरीर से रोग नश्ट करने का काम वैद्य का है और साहित्य में साहित्य के माध्यम से विरोधी स्वरों को नष्ट कर एकता की प्रतिष्ठापना करने का उत्तरदाईत्व तुलनात्मक अध्ययन का है।

साहित्यिक तुलनात्मक चुनौतियाँ :–

अगर हम तुलनात्मक अध्ययन प्रक्रिया को एक विज्ञान भी कहे तो इस तुलनात्मक विज्ञान की एक अहम् विशेशता यह भी है कि तुलनात्मक अध्ययन पध्दति में संदेह या संशय निर्माण होता है, प्रकृति में तथ्य या घटनाएँ एक दूसरे से पृथक घटित नही होकर निश्चित व्यवस्था और क्रम के अनुसार घटित होती है इन घटनाओं के पिछे कुछ नियम कार्यरत होते है और वैज्ञानिक ही उन नियमों की खोज करता है। अगर हम कहे की साहित्य निर्माण प्रक्रिया में भी अलग–अलग नियम या तत्वों का होना अनिवार्य है तो तुलनात्मक प्रक्रिया के अध्ययन के द्वारा साहित्य विरोधी तत्व, समान्तर तत्व, पोषक तत्वों को खोजा जा सकता है, हो सकता है कि यह प्रक्रिया थोडी क्लिश्ठता को लेकर चलती है किन्तु समाज के समक्ष हमें उच्चतम साहित्यिक मिश्ठान्न रखना है तो हमें इस चुनौती को स्विकार करना ही होगा।

साहित्यिक तुलनात्मक प्रक्रिया में अनुवाद :–

आज साहित्यिक जगत् के अन्तर्गत अनुवाद की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण प्रक्रिया माना गया है, क्योंकि अनुवाद के प्रक्रिया से ही साहित्य बहोत हद तक अपनी प्रादेशिकता की सिमाओं को तोडकर वैश्विकता की और बढ रहा है।किसी प्रादेशिक साहित्यीक कृति का अनुवाद अन्य किसी भाषा में अगर होता है तो इस बात से तात्पर्य यह भी है कि ओ साहित्यिक कृति एक प्रदेश से होकर अनेक प्रदेशों के पाठकों तक पहूँच जाती है। बंगाल के दो लेखक रविंद्रनाथ ठाकूर तथा शरदचंद्र चट्टोपाध्याय अनुवादों के बलपर ही सारे भारतवर्ष के पाठकों को प्रिय हो गए। अनुवादक अपनी भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा की साहित्यिक रचनाएँ पढता है और उसे अनुभव होता है कि ये उत्कृष्ठ रचनाएँ अपनी भाषा में आए तो भाषा समृध्द होगी। इस चिन्तन से प्रभावित होकर वह अनुवाद का कार्य करता है और इस तरह यहाँ तुलनात्मक अध्ययन की प्रक्रिया अपने–आप पूर्ण होती है।

तुलनात्मक प्रक्रिया में पाश्चात्य साहित्य का अध्ययन :–

वस्तुतः भारतवर्ष में तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन का एक उद्देश ऐसा है कि, पाश्चात्य साहित्य के बारे में एक समुचित विचारधारा का विकास आज अनिवार्य बन गया है। हमारे देश में अंग्रेजी सर्वाधिक प्रचलित विदेशी भाषा है इसका एक नकारात्मक परिणाम यह होता है कि तुलनात्मक साहित्य का भारतीय विद्यार्थी पाश्चात्य साहित्य या युरोप को मात्र अंग्रेजी या इंग्लॅड के माध्यम से जान पाता है। और इसके फलस्वरुप हम ब्रिटिश पूर्वाग्रहों को लेकर जीना सीखते है। तथा इस असंगत स्थिति से मुक्ति पाने का एकमात्र उपाय यही है कि अंग्रेजी के अतिरिक्त दूसरी विदेशी भाषाओं में रचित पाश्चात्य साहित्य का अध्ययन किया जाना जरुरी है। और इस जटीलतम काम को करने का एकमात्र उपाय तुलनात्मक अध्ययन ही है क्योंकि तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से ही हम किसी भाषा के पूर्वग्रहों से मुक्त हो सकते है।

तुलनात्मक प्रक्रिया में दो भाषाओं की भूमिका :–

तुलनात्मक अध्ययन पध्दति का एक विशेष सन्दर्भ ऐसा भी है की, तुलना उन्ही दो कृतियों में हो सकती है जिनमें काफी हद तक समानता के तत्वों के साथ ही कुछ विशमता भी हो। क्योंकि तुलनात्मक पध्दति में जिस विधा या विशय की तुलना की जाती है उसके अंतर्गत जो भी नकारात्मक और सकारात्मक तत्व आते है उन तत्वों का भी विश्लेषण करना जरुरी बन जाता है। यह बात हिन्दी के प्रसिध्द नाटककार लक्ष्मीनारायणलाल और उन्ही के समकालीन मराठी भाशा के प्रसिध्द नाटककार विजय तेंदुलकर के नाटकों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट हो सकती है। जिन विरोधी तत्वों को या सकारात्मक तत्वों का सन्दर्भ तुलनात्मक अध्ययन में आया है उनका तौलानिक अध्ययन होने के पश्चात् कुछ तौलनिक तत्वों के निश्कर्श यहाँ निर्माण हो सकते है।

डॉ. लक्ष्मीनारायण का 'अंधा कुआं' :–

डॉ. लक्ष्मीनारायणलाल का 'अंधा कुआं' जो 1955 में लिखा गया था और विजय तेंदुलकर का प्रसिध्द नाटक 'सखाराम बाईंडर' जो 1972 में प्रकाशित हुआ या इन दो नाटयकृतियों में तौलनिक अध्ययन के महत्वपूर्ण सन्दर्भ उजागर हो सकते है। 'अंधा कुआं' का नाटक 'भगौती' की मानसिकता पुरुष प्रधान संस्कृति के 'अहं' का प्रतीक है वह अपनी पत्नी 'सूका' को उसके प्रेमी इन्दर से छिन ले आता है। जब घर पर सूका भगौती के साथ रहने आती है तो उसका नारकीय जीवन यहाँ शुरु हो जाता है। भगौती हर दिन शराब पीकर सूका को मारता है, अपमानिमत करता है यहाँ तक की सूका को मानसिक यातनाएँ देने हेतु वह उसके लिए 'लच्छी' नायक सौत घर में लेकर आता है। सूका एक दिन 'लच्छी' को उसके प्रेमी के साथ भाग जाने में मदत करती है। भगौती का शरीर अनेक रोंगो से ग्रस्त जो जाता है और अचानक एक दिन सूका का प्रेमी इंदर भगौती को मारने के लिए उसके घर में आता है और स्वयं ही सूका भगौती हो बचाते हुए खुद मर जाती है। परन्तु सच्चाई यह है कि सूका उस दिन मरी नहीं बल्कि भगौती के लिए उसी दिन से जीवित हो गई।

विजय तेंदुलकर का 'सखाराम बाईंडर' :–

मराठी नाटककार विजय तेंदुलकर का सखाराम एक गरीब ब्राह्मण होने के बावजूद असभ्य आचरण करता दिखाई देता है। यहाँ सखाराम पाश्चात्य सांस्कृतिक विचारधारा का पोशणकर्ता बनकर बिना विवाह के ही स्त्री का भोग करना चाहता है। अपने पति द्वारा जिस स्त्री को घर से बाहर निकाला जाता है उन स्त्रीयों को सहारा देने का काम सखाराम बाईंडरकरता है।सखाराम के घर का वह राजा है, हर स्त्री को जो बेबसी में विवशता में उसका सहारा पाने के लिए उसके घर में आती है वह हर स्त्री का संभोग करना चाहता है। इस नाटक की प्रथम स्त्री प्रतिगृह से निकालने के बावजूद पुरुषों का आदर करती है। दूसरी स्त्री अपने अस्तित्व को संभालते हुए परिस्थिति को अधिन रखने की कोशिश करती है। परन्तु लक्ष्मी के कारण जो सखाराम की पहली स्त्री है सखाराम में परिवर्तन होता हम देख सकते है, जैसे भगवान की पूजा करने लगता है या शराब पिना कम कर देता है।

'अंधा कुआं' और 'सखाराम बाईंडर' का तौलानिक विश्लेषण :–

तुलनात्मक अध्ययन के प्रक्रिया के यह दोनों नाटक स्त्री जीवन के दुःखो की ही अभिव्यक्ति कर रहे है। यहाँ दोनों नाटकों के स्त्रीयों का अपना कोई अस्तित्व नहीं है। सूका का पती होने के बावजूद घर होने के बावजूद उसके भाग्य में दर्दनाक यातनाएँ है क्योंकि एक अजीब से रिश्ते में वह मजबूर है, तो दूसरी और लक्ष्मी पुरुषों से ही प्रताडित होने के बावजूद पुरुषों की पूजा कर रही है क्योंकि उसके अस्तित्व का अहसास उसे भी नहीं है। सखाराम बाईंडर शहरी वातावरण में निम्नवर्ग का पात्र है तो 'अंधा कुआं' का भगौती ग्रामीण जीवन का परिवेश लेकर हमारे सामने आता है। सखाराम शहरी वातावरण का प्रतिनिधित्व करता समाज के परम्पराओं को झुठलाकर व्यक्ति को ही महत्व देता है और भगौती सामाजिक परम्परा का पालन करते हुए दो स्त्रीयों के साथ विवाह करता है, सखाराम परम्परा विरोधी और स्वच्छन्द है। तात्पर्य कुछ स्त्रीयां पुरुष के वर्चस्व को न मानकर अपनी इच्छानुसार जीने की कोशिश करती है। यही कोशिश ही स्त्रीयों को उनका अस्तित्व दे सकती है। लक्ष्मीनारायण लाल का 'अंधा कुआं' और विजय तेंदुलकर का नाटक 'सखाराम बाईंडर' को एक सुत्र में तुलनात्मक अध्ययन के पध्दति से जोडता है।

तुलनात्मक प्रक्रिया में प्रादेशिकता का सवाल :–

तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन प्रक्रिया जब भाषिक सन्दर्भो और व्यापकता को लेकर चलती है तो हम कह सकते है कि एक ही राष्ट्र में अनेक भाषाएँ होती है और एक ही भाषा के अनेक राष्ट्र होते है। अर्थात समान भाषिक और साहित्यिक परंपरा के सूत्रों में जिस लोकसमुदाय को एक जगह बांध दिया है उसे हम 'राष्ट्र' कह सकते है। यहाँ यह भी प्रश्न महत्वपूर्ण है कि भारत देश में जो अंग्रेजी साहित्य निर्माण होता है हम उसे किस देश का माने क्या बांगलादेश के साहित्य को और हमारे पश्चिम बंगाल में निर्मित साहित्य को एक ही परम्परा में जोड सकेंगे ?यहाँ इनतमाम सवालों के जबाब हमें मिल सकते है; भारत में लिखा गया अंग्रेजी साहित्य अभारतीय नहीं हो सकता है, हाँ भले ही अंग्रेजी भाशा भारतीय नहीं है किंतु भाषिक अंतर को टाल कर तुलनात्मक साहित्यिक दृष्टि से अगर अंग्रेजी, बांगलादेशी या पश्चिम बंगाल में निर्मीत साहित्य को जब देखते है तब तौलनिक अध्ययन से उन भाषाओं के बीच से साहित्यिक तत्वों को ही आधार बनाकर सभ्यता तथा विषमता के बिंदुओं की तलाश हम कर सकते है।

तौलिनीक प्रक्रिया में सांश्लेशिक मानसिकता का महत्व :–

तौलनिक साहित्य को समझते समय तथा इस प्रक्रिया के आधिन तौलनिक कर्म करते समय यह ध्यान देना जरुरी है कि जिन दो भाशाओं के बिच हम तौलनिक अध्ययन कर रहे है उसमें सांश्लेशिक मानसिक दृष्टि का भी विकास हो जैसे मीराबाई के भक्ति मूलक गीतों के साथ महादेवी के रहस्यात्मक गीतों की तुलना हम करते है तो इसे हम तुलनात्मक साहित्य नहीं कह सकते क्योंकि यहाँ सांश्लेशिक मानसिक दृष्टि का अभाव ही रहेगा। परन्तू तुलना जब किसी एक राष्ट्र की परिधि को पार करके दूसरे राष्ट्रों की भाषाओं में लिखित साहित्य को भी अपने में समेट लेती है जैसे मीरा के गीतों का अध्ययन करते हुए उसकी अर्थछबियों की ईरान में निर्मित सूफी रहस्यात्मक गीतों अथवा अंग्रेजी के रहस्यवादी कवि ब्लेक की कविताओं के साथ तुलना की जाती है तो उस तौलनिक कार्य को हम निश्चित रुप से तुलनात्मक अध्ययन कह सकते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1)समाकलन 3 (अंतर्राष्ट्रीय साहित्य मंच तुलनात्मक साहित्य (पृ.सं.13), संपादक डॉ. नगेन्द्र
2)अमर मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश (पृ. सं. 101) संकलन कृष्ण कान्त दीक्षित, सूर्यनारायण उपाध्याय
3) साहित्यिक अनुसंधान के आयाम (पृ.सं.46) डॉ. रवीन्द्र कुमार जैन
4) नवीन शोध विज्ञान (पृ.सं. 56) डॉ. तिलकसिंहा
5) तुलनात्मक अध्ययन (पृ.सं. 68) संपादक अ.ह. राजूरकर, राजमल बोरा
6) तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य (पृ.सं.120) इन्द्रनाथ चौधुरी
7) तुलनात्मक अध्ययन–भारतीय भाशाएँ और साहित्य (पृ.सं.56,57,58) संपादक अ.ह. राजूरकर, राजमल बोरा
8) समाकलन 3 तुलनात्मक साहित्य संपादक – डॉ. नगेन्द्र

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net